'अप्प दीपो भव'

वॉयस ऑफ बुद्धा

Postal Reg. No.-DL(ND)-11/6144/2013-15
WPP Licence No.- U(C)-101/2013-15
R.N.I. No. 68180/98

प्रकाशन तिथि- 15 मई, 2014

मूल्य : पाँच रुपये

प्रेषक : डॉ0 उदित राज (राम राज) चेयरमैन - जस्टिस पब्लिकेशंस, टी-22, अतुल ग्रोव रोड, क्नॉट प्लेस, नई दिल्ली-110001, फोन : 23354841-42

Website : www.uditraj.com E-mail: dr.uditraj@gmail.com

● वर्ष : 17 ● अंक 12 ● पाक्षिक ● द्विभाषी ● 1 से 15 मई, 2014

वह जो पचास लोगों से प्रेम करता है उसके पचास संकट हैं,
वह जो किसी से प्रेम नहीं करता, उसके पास एक भी संकट नहीं है।
&xkSre cq)

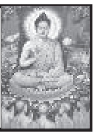

दलितों को अपमानित किसने किया ?

डॉ. उदित राज

बाबा रामदेव के मुंह से गैर-इरादतन निकली बात से यदि दलित समाज अपमानित हो गया तो फिर मुंह से निकली हुई बात से सम्मानित भी हो जाएगा। उन्होंने 26 अप्रैल को कहा था कि राहुल गांधी दलित बस्तियों में हनीमून मनाने जाते हैं। इनका इरादा तो राहुल गांधी की आलोचना करने की थी लेकिन 'हनीमून' शब्द ने पूरा संवाद दूसरी ओर मोड़ दिया। हनीमून का केवल इतना ही अर्थ नहीं होता कि केवल पति-पत्नी बाहर जाकर कुछ पल साथ बिताएं। पति-पत्नी हनीमून मनाने नैनीताल, मसूरी, कश्मीर आदि जगहों पर जाते हैं और अब तो वहां के लोग डंडा लेकर के खड़े हो जाएंगे अगर किसी ने ऐसी बात की तो? रामदेव जी ने यह नहीं कहा था कि राहुल गांधी दलित महिलाओं के साथ हनीमून मनाने जाते हैं बल्कि उनके बस्तियों में जाने की बात कही थी। हनीमून का दूसरा अर्थ यह भी है कि दो लोगों के बीच अच्छा समय बिताना और कभी-कभी दो राजनैतिक पार्टियों के बीच के मिलन को हनीमून मनाना कहा जाता है। रामदेव जी ने इस बयान पर बाद में खेद भी प्रकट किया। राजनीतिक स्वार्थ के लिए दलितों की भावनाओं का शोषण करने के लिए सुश्री मायावती और कुछ दलित तुरंत सक्रिय हो गए और कहा कि इससे दलित समाज अपमानित हुआ है। इसी बहाने भारतीय जनता पार्टी को घेरा कि वे इसके लिए जिम्मेदार हैं। बाबा रामदेव भाजपा समर्थक जरूर हैं लेकिन उनका अपना स्वयं का अस्तित्व है और कभी-कभी वे भाजपा से भी नाराज हो जाते हैं। रामदेव जी न तो भाजपा के सदस्य हैं और न ही प्रवक्ता। उन्होंने खुद खेद व्यक्त किया और मैंने भी इसे उचित नहीं कहा। क्यों नहीं मायावती जिस ताकत से इस मुद्दे पर भाजपा को घेरा वैसा ही दलितों के अधिकार शिक्षा, स्वास्थ्य, रोजगार आदि के लिए करती? दुर्भाग्य है कि कुछ दलित समाज के लोग अपनी सोच नहीं रखते और भावनाओं में बह जाते हैं। तमाम क्षेत्रों में भागीदारी और अधिकार के मुद्दे पर क्यों नहीं इतने सक्रिय होते जितना इस बयान और वाक्य पर।

मुझे तमाम दलित समाज के लोगों से निराशा हुई कि अभी भी वे भावनाओं में जी रहे हैं। हरियाणा में हिसार जिले के भगाना गांव में गत् 23 मार्च को चार दलित लड़कियों का बलात्कार हुआ। बलात्कार इसलिए किया गया क्योंकि उस गांव में सन् 2012 में दलितों का दबंगों ने बहिष्कार किया और वे पलायन कर गए और 21 मई 2012 से लेकर अभी तक हिसार के लघु सचिवालय में खुले आसमान के नीचे रह रहे हैं। बहिष्कार के बावजूद लगभग 95 दलित परिवार भगाना गांव में रह रहा था और इसकी सजा देने के लिए गत् 23 मार्च को चार दलित लड़कियों का अपहरण किया गया और दो दिनों तक सामूहिक बलात्कार। एफआईआर में असली दोषियों का नाम नहीं लिखा और अभी भी वे खुले घूम रहे हैं। 16 अप्रैल 2014 से ये लड़कियां सैकड़ों परिजनों के साथ जंतर-मंतर, नई दिल्ली पर न्याय के लिए धरना दिए हैं। क्या मायावती को इस बलात्कार में दलित का सम्मान दिखता है? अगर नहीं तो इस पर वह चुप क्यों और बाबा रामदेव के शब्द पर इतना बवाल? मुझे भी कुछ दलितों ने कठघरे में खड़ा करने की कोशिश की है कि मैं चुप क्यों हूं? पहला कि मैं चुप नहीं हूं और जहां भी रहूंगा दलित समाज के अधिकार के लिए कोई समझौता नहीं करूंगा। मैंने अपनी जिंदगी के लगभग 17 साल इस समाज के मान-सम्मान और अधिकार के लिए आहूत किया है। कहां हैं वे दलित क्रांतिकारी जो मुझे तो कटघरे में खड़ा करने का प्रयास किया लेकिन मायावती से है हिम्मत कहने की वह बलात्कार के मामले में चुप क्यों है? वास्तव में दलित के मान-सम्मान की लूट यहां हुई है जिस पर मायावती चुप हैं। सीबीआई का डर दिखाकर कांग्रेस समर्थन लेती रही है और हरियाणा में उसी की सरकार है और यही कारण है कि उन्हें बलात्कार का होना अपमान नहीं दिखता। आरक्षण कानून बनाने के लिए 2004 में राज्यसभा में बिल पेश किया गया और 10 साल तक पास नहीं हुआ। पदोन्नति में आरक्षण वाला बिल भी संसद में लटक गया। क्या मायावती ने इस पर कांग्रेस को घेरा? असली मान-सम्मान और अधिकार तो यहां लुटा है।

बुजुर्ग दलित महिलाओं के पैर धोते बाबा रामदेव

बाबा रामदेव की कोई मैं वकालत नहीं कर रहा हूं लेकिन यह सच्चाई है कि उन्होंने दलित महिलाओं के पैर धोएं और उन्हें दान भी दिया। अपने यहां दलितों को रोजगार दिया है। बहुजन समाज पार्टी क्या बहुजन नहीं रही, जो उनकी जाति पर हमला किया? बाबा रामदेव जी बहुजन समाज से हैं। क्या मायावती से कोई अधिक दलित का अपमान कर सकता है? मंच पर बगल में ब्राह्मण तो बैठ सकता है लेकिन दलित नेता कभी नहीं। सुनियोजित ढंग से मायावती ने सारा दलित नेतृत्व ही समाप्त कर दिया। बसपा में दलित नेता नहीं हो सकता और राष्ट्रीय स्तर पर तो बड़ी बात है यहां तक कि प्रदेश, जिला, ब्लॉक स्तर तक कोई दलित नेतृत्व नहीं उभर पाया। क्या इससे ज्यादा और कोई दलित समाज का अपमान कर सकता है? जो अधिकार मैंने संघर्ष करके पदोन्नति में आरक्षण का अधिकार हासिल किया था, मायावती के मुख्यमंत्री के काल में लखनऊ हाईकोर्ट ने छीन लिया क्यों कि पैरवी नहीं की गयी। 2007 में अनुसूचित जाति/जनजाति अत्याचार निवारण अधिनियम को निष्प्रभावी मायावती ने ही किया था जिसे मैंने इलाहाबाद हाईकोर्ट से बचाया। क्या बसपा का कोई दलित कार्यकर्ता इनसे बात-विचार कर सकता है?

बसपा के उभार के साथ-साथ देश में नई आर्थिक नीति आई जिसके वजह से व्यापार, रोजगार और आय के तमाम साधन पैदा हुए। क्या इस आर्थिक नीति का विरोध करके इसे रोक पाए या उसमें भागीदारी सुनिश्चित हो सकी? वे दलित समाज का न तो अधिकार सुनिश्चित करा पाये और न ही सम्मान दे पाये। तमाम दलित बसपा को अपना मानते हैं। जब उन्हें मायावती पैर की जूती समझती हैं तो सवर्ण समाज से इतनी आशा क्यों? बसपा के कार्यकर्ता लोभी-लालची और डरपोक हैं और उनमें हिम्मत नहीं है कि मायावती से बात-विचार भी कर सके, फैसला लेने की बात तो दूर की है। मायावती अपने घर में दलितों का सम्मान नहीं करती है तो उनका नैतिक अधिकार बोलने का बनता ही नहीं कि दूसरे जाति के लोग दलितों का मान या सम्मान करें। मैं अपने दलितों का सम्मान करता हूं इसलिए मेरा अधिकार तो बनता है यदि कोई इन्हें अपमानित करे।

ओबीसी नायकों ने किया दलित आंदोलन और साहित्य का विकास

चौथीराम यादव

हमारे देश में जितने भी सांस्कृतिक आंदोलन हुए, उनमें ओबीसी नायकों की भूमिका बहुत महत्वपूर्ण रही है। सामाजिक परिवर्तन में उनके योगदान को नकारना बेमानी होगा। बहुजन समाज के प्रवक्ता और आधारस्तंभ दोनों आम्बेडकर रहे हैं। इसके मद्देनजर अगर आम्बेडकर से पहले के ओबीसी नायकों पर बात की जाए तो उन्होंने दलित आंदोलन के जरिए जो सबसे पहला काम किया तो वह धार्मिक वर्चस्व को तोड़ने का था। चूंकि तब समाज में जाति, धर्म, संप्रदाय की श्रेष्ठता के बोझ तले ब्राह्मणवादी व्यवस्था कायम थी, इसलिए सामाजिक, आर्थिक और धार्मिक विषमता बहुत बुरी तरह फैली हुई थी। ओबीसी समाज से जो नायक निकले, उन्होंने इस विषमता को तोड़ने के लिए ब्राह्मणवाद और सामंतवाद के खिलाफ आवाज उठायी। चूंकि ब्राह्मणवादी विचारधारा की पोषक सामंतवादी व्यवस्था होती है, इसलिए सामाजिक विषमता को खत्म करने के लिए इसके खिलाफ आवाज उठनी भी जरूरी थी। ब्राह्मणवाद वर्ण व्यवस्था का समर्थन करने के साथ-साथ मनुष्य के ऊपर मनुष्य की श्रेष्ठता का समर्थन करता था और आदमी को आदमी से अलग करता था। इसी कारण धार्मिक, सामाजिक और आर्थिक शोषण के खिलाफ आंदोलन की जरूरत महसूस हुई।

एक होता है राजनीतिक आंदोलन और दूसरा होता है सांस्कृतिक आंदोलन। राजनीतिक आंदोलन समय-समय पर लोगों ने किया। शाहूजी महाराज ने किया, पेरियार ने किया और लोगों ने अपने-अपने समय पर आंदोलन चलाया। आगे चलकर डॉ. आम्बेडकर ने राजनीतिक आंदोलन बहुत व्यापक रूप में पूरे देश में चलाया। उत्तरप्रदेश में भी आम्बेडकर के आंदोलन का बहुत गहरा प्रभाव और प्रसार हुआ। शुरुआत में दलित आंदोलन और दलित साहित्य का ओबीसी के नायकों ने विकास किया। इसे अगर देश के स्तर पर देखें तो ज्योतिबा फुले ओबीसी थे। शाहूजी महाराज ओबीसी थे। पेरियार ओबीसी थे और उत्तर भारत में ललईसिंह यादव, रामस्वरूप वर्मा और सभी लोग दलित आंदोलन के मजबूत पक्षधर थे। इन लोगों ने आंदोलन चलाया और उसको आगे बढ़ाया। इन्होंने दलितों की समस्याओं और समाज में उनकी स्थिति को लेकर नाटक लिखे। आश्चर्य की बात है कि दलित इनके महत्व को मानते हैं, लेकिन ओबीसी के लोग जानते ही नहीं कि रामस्वरूप वर्मा या ललईसिंह यादव की किताब क्या है? इन लोगों ने दलितों के नायकों पर नाटक लिखे। ललईसिंह यादव ने पांच नाटक लिखे, जिनमें शम्बूक वध और एकलव्य काफी प्रसिद्ध हैं। इस तरह वर्चस्ववादी व्यवस्था के खिलाफ लंबा आंदोलन चला है, बाद में लालू प्रसाद यादव, मुलायम और मायावती ने इसका विकास किया, लेकिन बाद में ये लोग सत्ता की राजनीति करने लगे। यानी राजनेता से इतर ये लोग पिछड़ों-दलितों के बीच सामाजिक परिवर्तनकारी राजनीति नहीं कर सके। इनकी राजनीति कुर्सी तक सीमित हो गई।

जहां तक ओबीसी समाज में सांस्कृतिक आंदोलन का सवाल है तो सांस्कृतिक आंदोलन में एक समाज की कला, साहित्य और संस्कृति आदि सब चीजों का विकास होता है। सांस्कृतिक आंदोलन दलितों-पिछड़ों के लिए बहुत महत्वपूर्ण है, क्योंकि इस समाज की सबसे बड़ी समस्या ही सांस्कृतिक पिछड़ापन है, जिसे व्यापक आंदोलन के स्तर पर चलाया जाना चाहिए।

विषमता को मिटाने के लिए ज्योतिबा फुले और सावित्रीबाई फुले का योगदान अविस्मरणीय है। ज्यातिबा फुले ने इन विषमताओं को लेकर एक किताब 'गुलामगिरी' लिखी, जिसका अंग्रेजी में भी अनुवाद हो चुका है। इस किताब में उन्होंने ब्राह्मणवाद के खिलाफ संघर्ष, स्त्री शिक्षा, किसानों और खेतिहर मजदूरों, दमितों-दलितों, शोषितों को आवाज देने का काम किया। फुले दंपत्ति के शिक्षा खासकर स्त्री शिक्षा के लिए योगदान को इसी से समझा जा सकता है कि उन्होंने महाराष्ट्र में स्त्रियों के लिए पहला स्कूल खोला, जोकि भारत में भी महिलाओं का पहला स्कूल था। स्त्री शिक्षा की दिशा में फुले दंपत्ति द्वारा उठाए गए इस कदम का सवर्णों ने खासा विरोध किया। सवर्ण समाज में स्त्री शिक्षा वर्जित थी, सवर्ण महिलाएं तो दलितों से भी महादलित थीं। वे 100-150 साल पहले तक घर से बाहर कदम नहीं रख सकती थीं। एक ऐसे समाज में फुले दंपत्ति का स्त्री शिक्षा के लिए स्कूल की स्थापना करना निश्चय ही साहसिक कदम था। सावित्रीबाई फुले घर से बाहर निकलकर पढ़ाने का काम करने वाली पहली शिक्षिका थीं। जब वो स्कूल के लिए निकलतीं थी, तो अपने साथ घर से हमेशा एक अतिरिक्त साड़ी लेकर चलती थीं क्योंकि उन्हें तंग करने और स्त्री शिक्षा का विरोध करने के लिए उन पर गोबर और पत्थर फेंके जाते थे, उन पर भद्दी फब्तियां कसी जाती थीं, मगर फिर भी वे पीछे नहीं हटीं। मगर ताज्जुब की बात यह है कि सवर्णों ने फुले दंपत्ति के शिक्षा खासकर स्त्री शिक्षा के क्षेत्र में किए गए काम को कभी उस तरह तवज्जो नहीं दी, जिस तरह राजा राममोहन राय को। खास बात तो यह है कि राजा राममोहन राय के समय तक शिक्षा का काफी प्रचार-प्रसार हो चुका था। सही मायनों में देखा जाए तो फुले दंपत्ति के संघर्ष ने महाराष्ट्र में दलित आंदोलन की नींव रखने का काम किया।

दक्षिण भारत में दलित मसीहा के बतौर इरोड वेंकट नायकर रामासामी पेरियार को देखा जाना चाहिए। पेरियार ने ब्राह्मणवाद के खिलाफ वहां एक वृहद् आंदोलन की नींव रखी। उन्होंने दक्षिण भारत में दलितों के मंदिरों में प्रवेश के लिए आंदोलन किया। ताज्जुब की बात यह है कि जब पेरियार ने मंदिर आंदोलन की शुरुआत की तब दलितों का मंदिर में प्रवेश करना तो दूर, जिस रास्ते में मंदिर बना हो उस रास्ते से जाना तक वर्जित था। जानवरों से भी बदतर हालत थी दलितों की। हालांकि कुछ कांग्रेस नेताओं के कहने पर ही उन्होंने वाईकम आंदोलन का नेतृत्व स्वीकार किया, जो मन्दिरों की ओर जाने वाली सड़कों पर दलितों के चलने की मनाही को हटाने के लिए संघर्षरत् था, मगर बाद में युवाओं के लिए कांग्रेस संचालित प्रशिक्षण शिविर में ब्राह्मण प्रशिक्षकों द्वारा गैर-ब्राह्मण छात्रों के प्रति भेदभाव बरतते देख उनका मन कांग्रेस से उखड़ने लगा। उन्होंने कांग्रेस नेताओं के समक्ष दलितों के लिए आरक्षण का प्रस्ताव भी रखा, जिसे नामंजूर कर दिया गया, इसलिए उन्होंने कांग्रेस छोड़ दी। पेरियार के खिलाफ भी ब्राह्मणवादी विचारकों ने एक नए आंदोलन की शुरुआत कर दी। महात्मा गांधी ने पेरियार विरोधियों को समझाया कि उनकी बात मानकर दलितों को मंदिरों के रास्तों पर चलने की इजाजत दे दी जाए, नहीं तो पेरियार दलितों के मंदिर प्रवेश के लिए भयंकर आंदोलन करेंगे। चूंकि पिछड़ा-दलित समुदाय पेरियार के साथ था, इसलिए कांग्रेस की साख खत्म हो रही थी और गांधी को कांग्रेस की साख बचाने की चिंता थी। गांधी भी पेरियार के साथ नहीं थे।

इसी तरह कोल्हापुर के शाहूजी महाराज, जो खुद आज के ओबीसी समुदाय से आते थे, दलितों के असली नायक साबित हुए। वे कोल्हापुर के राजा थे। उन्होंने अपने राज्य में सबसे पहले दलितों-पिछड़ों के लिए 51 प्रतिशत आरक्षण देकर हर क्षेत्र में समतामूलक समाज की स्थापना की शुरुआत की। उन्हें आरक्षण का जनक भी कहा जाता है, क्योंकि शाहूजी महाराज ने ही सबसे पहले भारतवर्ष में दलितों-पिछड़ों को आरक्षण देने की शुरुआत की। वे महिलाओं के लिए शिक्षा सहित कई प्रगतिशील गतिविधियों के साथ भी जुड़े थे। उन्होंने गरीबों, किसानों, मजदूरों, दबे-कुचले लोगों को प्रशासन में भागीदारी दी। शाहूजी महाराज शासन-प्रशासन, धन, धरती, व्यापार, शिक्षा, संस्कृति व सम्मान-प्रतिष्ठा सभी क्षेत्रों में वे आनुपातिक भागीदारी के प्रबल समर्थक थे। उनका नारा भी था 'जिसकी जितनी संख्या भारी उसकी उतनी हिस्सेदारी, जिनकी जितनी हिस्सेदारी उसकी उतनी भागीदारी, जिसकी जितनी भागीदारी, उसकी उतनी जिम्मेदारी।'

जहां तक ओबीसी नायकों की भारतीय समाज तथा साहित्यिक, अकादमिक अध्ययनों में वह पहचान नहीं बन सकी, जिसके वे हकदार थे, का सवाल है तो, यह समझने की जरूरत है कि ओबीसी का कोई अकादमिक केंद्र नहीं रहा है। हालांकि आज के दौर में देखा जाए तो ओबीसी वैचारिक प्रतिबद्धता के साथ हर जगह मौजूद हैं। जहां तक साहित्य जगत में ओबीसी के हाशिए पर रहने का सवाल है, तो राजेंद्र यादव से पहले किसी ने इस पर बात ही नहीं की। हालांकि मौजूदा समय में काफी लोगों ने इसी दिशा में पहल लेनी शुरू कर दी है।

(प्रसिद्ध आलोचक चौथीराम यादव से यह बातचीत प्रेमा नेगी ने की है)

(फारवर्ड प्रेस की साहित्य वार्षिकी, मई, 2014 से साभार)

अनुसूचित जाति एवं जनजाति छात्रों के लिए

निःशुल्क उच्च शिक्षा का बेहतरीन मौका

आर्थिक कठिनाइयों के कारण दलित छात्र उच्च शिक्षा से वंचित रह जाते हैं, जो चिंता का विषय है। अजा/जजा परिसंघ के रा0 चेयरमैन, डॉ0 उदित राज जी, सभी शिक्षण संस्थानों से अपील करते रहे हैं कि वे अपने यहां दलित छात्रों की निःशुल्क शिक्षा की व्यवस्था करके अपने सामाजिक दायित्वों को निभाएं। इसी क्रम में भगवान महावीर ग्रुप ऑफ इंस्टीट्यूट्स के चेयरमैन डॉ0 संजय जैन ने वायदा किया है कि वे अपने संस्थान में यथासंभव दलित छात्रों को निःशुल्क शिक्षा देंगे। इनके संस्थान में निम्नलिखित उच्च शैक्षणिक पाठ्यक्रमों की सुविधा है -

B.Arch, Polytechnic Diploma, B.Tech, M.Tech, BBA, BCA, D.Ed., JBT, B.Ed., M.Ed., B.Pharma, M. Pharma, C.Ped, B.P.Ed., M.P. Ed.

contact

(A Group of Jain Minority Institutions)

Bhagwan Mahaveer Group of Institutions

(Approved by AICTE, New Delhi, Ministry of HRD, Govt. of India, & Affiliated to DTE, Haryana and DCR University of Science & Technology Murthal, Sonepat (Haryana))

For Admission & Other details Visit at www.msitsnp.in or Contact :-

Prof : (Dr.) Sanjay Jain, Chairman, M.- +91-9810628607

Prof : (Dr.) O. P. Sharma, Registrar, M.- +91-8607400783 &

Hostel facility available on payment basis.

मई दिवस की कहानी

मजदूरों का त्योहार मई दिवस आठ घण्टे काम के दिन के लिए मजदूरों के शानदार आन्दोलन से पैदा हुआ। उसके पहले मजदूर चौदह से लेकर सोलह-अठारह घण्टे तक खटते थे। कई देशों में काम के घण्टों का कोई नियम ही नहीं था। "सूरज उगने से लेकर रात होने तक" मजदूर कारखानों में काम करते थे। दुनियाभर में अलग-अलग जगह इस माँग को लेकर आन्दोलन होते रहे थे। भारत में भी 1862 में ही मजदूरों ने इस माँग को लेकर कामबन्दी की थी। लेकिन पहली बार बड़े पैमाने पर इसकी शुरुआत अमेरिका में हुई।

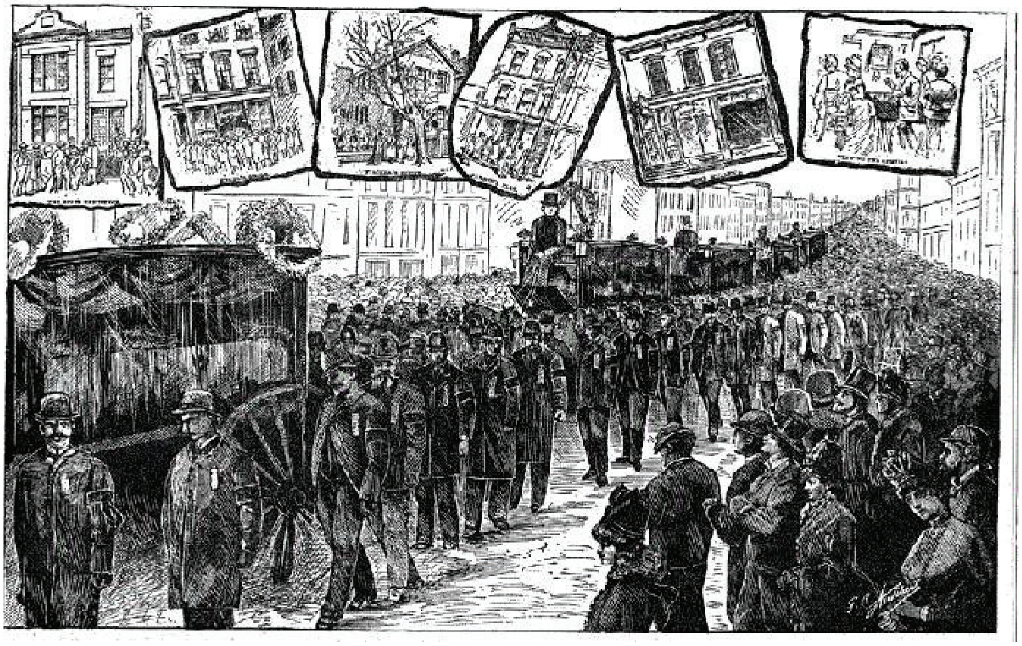

मजदूरों ने अपने अनुभवों से समझ लिया था कि उनकी एकता ही उनकी सबसे बड़ी ताकत है। अमेरिका में एक विशाल मजदूर वर्ग पैदा हुआ था। इन मजदूरों ने अपने बलिष्ठ हाथों से अमेरिका के बड़े-बड़े शहर बसाये, सड़कों और रेल पटरियों का जाल बिछाया, नदियों को बाँधा, गगनचुम्बी इमारतें खड़ी कीं और पूँजीपतियों के लिए दुनिया भर के ऐशो-आराम के साधन जुटाये। उस समय अमेरिका में मजदूरों को 12 से 18 घण्टे तक खटाया जाता था। बच्चों और महिलाओं का 18 घण्टों तक काम करना आम बात थी। अधिकांश मजदूर अपने जीवन के 40 साल भी पूरे नहीं कर पाते थे। अगर मजदूर इसके खिलाफ आवाज उठाते थे तो उन पर निजी गुण्डों, पुलिस और सेना से हमले करवाये जाते थे! लेकिन इन सबसे अमेरिका के जाँबाज मजदूर दबने वाले नहीं थे! उनके जीवन और मृत्यु में वैसे भी कोई फर्क नहीं था, इसलिए उन्होंने लड़ने का फैसला किया! 1877 से 1886 तक मजदूरों ने अमेरिका भर में आठ घण्टे के कार्यदिवस की माँग पर एकजुट और संगठित होना शुरू किया। 1886 में पूरे अमेरिका में मजदूरों ने 'आठ घण्टा समितियाँ' बनायीं। शिकागो में मजदूरों का आन्दोलन सबसे अधिक ताकतवर था। वहाँ पर मजदूरों के संगठनों ने तय किया कि 1 मई के दिन सभी मजदूर अपने औजार रखकर सड़कों पर उतरेंगे और आठ घण्टे के कार्यदिवस का नारा बुलन्द करेंगे।

एक मई 1886 को पूरे अमेरिका के लाखों मजदूरों ने एक साथ हड़ताल शुरू की। इसमें 11,000 फैक्टरियों के कम से कम तीन लाख अस्सी हजार मजदूर शामिल थे। शिकागो महानगर के आस-पास सारा रेल यातायात ठप्प हो गया और शिकागो के ज्यादातर कारखाने और वर्कशाप बन्द हो गये। शहर के मुख्य मार्ग मिशिगन एवेन्यू पर अल्बर्ट पार्सन्स के नेतृत्व में मजदूरों ने एक शानदार जुलूस निकाला।

मजदूरों की बढ़ती ताकत और उनके नेताओं के अडिग संकल्प से भयभीत उद्योगपति लगातार उन पर हमला करने की घात में थे। सारे के सारे अखबार (जिनके मालिक पूँजीपति थे।) "लाल खतरे" के बारे में चिल्ल-पों मचा रहे थे। पूँजीपतियों ने आसपास से भी पुलिस के सिपाही और सुरक्षाकर्मियों को बुला रखा था। इसके अलावा कुख्यात पिंकरटन एजेंसी के गुण्डों को भी हथियारों से लैस करके मजदूरों पर हमला करने के लिए तैयार रखा गया था। पूँजीपतियों ने इसे "आपात स्थिति" घोषित कर दिया था। शहर के तमाम धन्नासेठों और व्यापारियों की बैठक लगातार चल रही थी जिसमें इस "खतरनाक स्थिति" से निपटने पर विचार किया जा रहा था।

3 मई को शहर के हालात बहुत तनावपूर्ण हो गये जब मैकार्मिक हार्वेस्टिंग मशीन कम्पनी के मजदूरों ने दो महीने से चल रहे लाक आउट के विरोध में और आठ घण्टे काम के दिन के समर्थन में कार्रवाई शुरू कर दी। जब हड़ताली मजदूरों ने पुलिस पहरे में हड़ताल तोड़ने के लिए लाये गये तीन सौ गद्दार मजदूरों के खिलाफ मीटिंग शुरू की तो निहत्थे मजदूरों पर गोलियाँ चलायी गयीं। चार मजदूर मारे गये और बहुत से घायल हुए। अगले दिन भी मजदूर ग्रुपों पर हमले जारी रहे। इस बर्बर पुलिस दमन के खिलाफ चार मई की शाम को शहर के मुख्य बाजार हे मार्केट स्क्वायर में एक जनसभा रखी गयी। इसके लिए शहर के मेयर से इजाजत भी ले ली गयी थी।

मीटिंग रात आठ बजे शुरू हुई। करीब तीन हजार लोगों के बीच पार्सन्स और स्पाइस ने मजदूरों का आह्वान किया कि वे एकजुट और संगठित रहकर पुलिस दमन का मुकाबला करें। तीसरे वक्ता सैमुअल फील्डेन बोलने के लिए जब खड़े हुए तो रात के दस बज रहे थे और जोरों की बारिश शुरू हो गयी थी। इस समय तक स्पाइस और पार्सन्स अपनी पत्नी और दो बच्चों के साथ वहाँ से जा चुके थे। इस समय तक भीड़ बहुत कम हो चुकी थी- कुछ सौ लोग ही रह गये थे। मीटिंग करीब-करीब खत्म हो चुकी थी कि 180 पुलिसवालों का एक जत्था धड़धड़ाते हुए हे मार्केट चौक में आ पहुँचा। उसकी अगुवाई कैप्टन बानफील्ड कर रहा था जिससे शिकागो के नागरिक उसके क्रूर और बेहूदे स्वभाव के कारण नफरत करते थे। मीटिंग में शामिल लोगों को चले जाने का हुक्म दिया गया। सैमुअल फील्डेन पुलिसवालों को यह बताने की कोशिश ही कर रहे थे कि यह शान्तिपूर्ण सभा है कि इसी बीच किसी ने मानों इशारा पाकर एक बम फेंक दिया। आज तक बम फेंकने वाले का पता नहीं चल पाया है। यह माना जाता है कि बम फेंकने वाला पुलिस का भाड़े का टट्टू था। स्पष्ट था कि बम का निशाना मजदूर थे लेकिन पुलिस चारों और फैल गयी थी और नतीजतन बम का प्रहार पुलिसवालों पर हुआ। एक मारा गया और पाँच घायल हुए। पगलाये पुलिसवालों ने चौक को चारों ओर से घेरकर भीड़ पर अन्धाधुन्ध गोलियाँ चलानी शुरू कर दीं। जिसने भी भागने की कोशिश की उस पर गोलियाँ और लाठियाँ बरसायी गयीं। छः मजदूर मारे गये और 200 से ज्यादा जख्मी हुए। मजदूरों ने अपने खून से अपने कपड़े रँगकर उन्हें ही झण्डा बना लिया।

इस घटना के बाद पूरे शिकागो में पुलिस ने मजदूर बस्तियों, मजदूर संगठनों के दफ्तरों, छापाखानों आदि में जबरदस्त छापे डाले। प्रमाण जुटाने के लिए हर चीज उलट-पलट डाली गयी। सैकड़ों लोगों को मामूली शक पर पीटा गया और बुरी तरह टार्चर किया गया। हजारों गिरफ्तार किये गये। आठ मजदूर नेताओं-अल्बर्ट पार्सन्स, आगस्ट स्पाइस, जार्ज एंजेल, एडाल्फ फिशर, सैमुअल फील्डेन, माइकेल श्वाब, लुइस लिंग्ग और आस्कर नीबे पर झूठा मुकदमा चलाकर उन्हें हत्या का मुजरिम करार दिया गया। इनमें से सिर्फ एक, सैमुअल फील्डेन बम फटने के समय घटनास्थल पर मौजूद था। जब मुकदमा शुरू हुआ तो सात लोग ही कठघरे में थे। डेढ़ महीने तक अल्बर्ट पार्सन्स पुलिस से बचता रहा। वह पुलिस की पकड़ में आने से बच सकता था लेकिन उसकी आत्मा ने यह गवारा नहीं किया कि वह आजाद रहे जबकि उसके बेकसूर साथी फर्जी मुकदमें में फँसाये जा रहे हों। पार्सन्स खुद अदालत में आया और जज से कहा, "मैं अपने बेकसूर साथियों के साथ कठघरे में खड़ा होने आया हूँ।"

पूँजीवादी न्याय के लम्बे नाटक के बाद 20 अगस्त 1887 को शिकागो की अदालत ने अपना फैसला दिया। सात लोगों को सजा-ए-मौत और एक (नीबे) को पन्द्रह साल कैद बामशक्कत की सजा दी गयी। स्पाइस ने अदालत में चिल्लाकर कहा था कि "अगर तुम सोचते हो कि हमें फाँसी पर लटकाकर तुम मजदूर आन्दोलन को... गरीबी और बदहाली में कमरतोड़ मेहनत करनेवाले लाखों लोगों के आन्दोलन को कुचल डालोगे, अगर यही तुम्हारी राय है -तो खुशी से हमें फाँसी दे दो। लेकिन याद रखो... आज तुम एक चिंगारी को कुचल रहे हो लेकिन यहाँ-वहाँ, तुम्हारे पीछे, तुम्हारे सामने, हर ओर लपटें भड़क उठेंगी। यह जंगल की आग है। तुम इसे कभी भी बुझा नहीं पाओगे।"

सारे अमेरिका और तमाम दूसरे देशों में इस क्रूर फैसले के खिलाफ भड़क उठे जनता के गुस्से के दबाव में अमेरिका के सुप्रीम कोर्ट ने पहले तो अपील मानने से इन्कार कर दिया लेकिन बाद में इलिनाय प्रान्त के गवर्नर ने फील्डेन और श्वाब की सजा को आजीवन कारावास में बदल दिया। 10 नवम्बर 1887 को सबसे कम उम्र के नेता लुइस लिंग्ग ने कालकोठरी में आत्महत्या कर ली।

अगला दिन (11 नवम्बर 1887) मजदूर वर्ग के इतिहास में काला शुक्रवार था। पार्सन्स, स्पाइस, एंजेल और फिशर को शिकागो की कुक काउण्टी जेल में फाँसी दे दी गयी। अफसरों ने मजदूर नेताओं की मौत का तमाशा देखने के लिए शिकागो के दो सौ धनवान शहरियों को बुला रखा था। लेकिन मजदूरों को डर से काँपते-घिघियाते देखने की उनकी तमन्ना धरी की धरी रह गयी। वहाँ मौजूद एक पत्रकार ने बाद में लिखा :"चारों मजदूर नेता क्रान्तिकारी गीत गाते हुए फाँसी के तख्ते तक पहुँचे और शान के साथ अपनी-अपनी जगह पर खड़े हो हुए। फाँसी के फन्दे उनके गलों में डाल दिये गये। स्पाइस का फन्दा ज्यादा सख्त था, फिशर ने जब उसे ठीक किया तो स्पाइस ने मुस्कुराकर धन्यवाद कहा। फिर स्पाइस ने चीखकर कहा, 'एक समय आयेगा जब हमारी खामोशी उन आवाजों से ज्यादा ताकतवर होगी जिन्हें तुम आज दबा डाल रहे हो...' फिर पार्सन्स ने बोलना शुरू किया, 'मेरी बात सुनो... अमेरिका के लोगों! मेरी बात सुनो... जनता की आवाज को दबाया नहीं जा सकेगा...' लेकिन इसी समय तख्ता खींच लिया गया।

13 नवम्बर को चारों मजदूर नेताओं की शवयात्रा शिकागो के मजदूरों की एक विशाल रैली में बदल गयी। पाँच लाख से भी ज्यादा लोग इन नायकों को आखिरी सलाम देने के लिए सड़कों पर उमड़ पड़े।

तब से गुजरे 126 सालों में अनगिनत संघर्षों में बहा करोड़ों मजदूरों का खून इतनी आसानी से धरती में जज्ब नहीं होगा। फाँसी के तख्ते से गूँजती स्पाइस की पुकार पूँजीपतियों के दिलों में खौफ पैदा करती रहेगी। अनगिनत मजदूरों के खून की आभा से चमकता लाल झण्डा हमें आगे बढ़ने के लिए प्रेरित करता रहेगा।

(साभार : मजदूर बिगुल)

डॉ. अंबेडकर : कलम का कमाल (भाग:2), संपूर्ण वाड्मय का सार : खंड 12 से साभार

''एक व्यक्ति हिंदू के लिए अछूत है, तो वह पारसी और मुसलमान के लिए भी अछूते हैं!!'' - डॉ. भीमराव अंबेडकर

यह घटना 1934 की है। दलित वर्गों के आंदोलन में कार्यरत सहयोगियों ने पर्यटन पर जाने का फैसला किया। मैं भी उनके साथ शामिल हो गया। हम कुल 30 लोग थे। पर्यटन के लिए बस और कारें किराए पर ली गई। हमें औरंगाबाद जाना था जो तब निजाम हैदराबाद की रियासत में था। रास्ते में दौलताबाद पड़ता है। वह भी निजाम की रियासत में पड़ता है। दौलताबाद का किला (दुर्ग) एक प्राचीन किला है जिसे पर्यटक प्रायः देखने जाते हैं। हमने किसी को अपनी यात्रा की सूचना नहीं दी थी। किंतु दौलताबाद में सूचना जरूर भेजी थी। हम किले के द्वार पर पहुंचे। वहां एक छोटा-सा तालाब था जो पानी से लबालब भरा हुआ था। हमसे कुछ लोगों ने तालाब पर हाथ-मुंह धो लिए। रमजान का महीना था। मुसलमानों को पता चला गया कि हमने अछूत होते हुए तालाब से पानी ले लिया है। वे गंदी गालियां देने लगे। लड़ाई तक नौबत आ गई। दंगे बल्कि हत्या तक हो जाती। तब मैंने मुसलमानों को पूछा : यदि अछूत मुसलमान बन जाता, तब भी तुम क्या ऐसा ही भद्दा अमानवीय व्यवहार करते? क्या तुम्हारा मजहब यही कुछ सिखाता है? इन प्रश्न के बाद हालात कुछ सामान्य हुए।

हमने दुर्ग के बड़े अधिकारी के पास किले को देखने का निवेदन किया। उसने आज्ञा तो दी किंतु साथ ही सशस्त्र सिपाही भी भेज दिए ताकि हम किसी जगह भी पानी को न छूएं। जाहिर है कि यदि एक व्यक्ति हिंदू के लिए अछूत है, तो वह पारसी और मुसलमान के लिए भी अछूते हैं!!''

भूमि विवाद के कारण नोएडा के 50 दलित परिवारों का पलायन

नोएडा। कनावनी गांव में 28 अप्रैल (सोमवार) के सुबह हुई पंचायत में 60 मीटर प्लॉट का विवाद निपटाने के लिए इसकी पैमाइश कराने का फैसला हो चुका था, लेकिन तभी किसी ने पूर्व प्रधान देशराज के सिर में ईंट दे मारी। देशराज इस पर दावा करते रहे हैं। देशराज के सुरक्षा गार्ड रामचंद्र सिंह यादव ने आरोप लगाया है कि दलित पक्ष के करीब 40 लोगों ने देशराज पर लाठी, सरिये और फावड़ों से हमला कर दिया। जवाब में देशराज के दोनों गार्ड और परिवार के अन्य लोगों ने फायरिंग की। देशराज के भाई सतवीर के बेटे राहुल (22 वर्ष) की गले लगने से मौत हो गयी। आरोप है कि इससे गुस्साए दबंगों ने दलितों के घरों में घुसकर हमला बोल दिया। उन्होंने इंदिरापुरम के उन स्कूलों में भी तोड़-फोड़ की, जिनमें दलितों के बच्चे पढ़ते हैं। करीब एक घंटे बाद पुलिस के आने पर स्थिति काबू में आई, तब तक 10 लोग घायल हो चुके थे। एसएसपी प्रीतिंदर सिंह ने बताया कि मृतक के चचेरे भाई अशोक कसाना की तहरीर पर रिपोर्ट दर्ज की गई है।

जमीन के एक टुकड़े को लेकर नोएडा के कनावनी गांव में 28 अप्रैल की सुबह गुर्जर और जाटव समुदाय के बची हुई हिंसा ने अगले दिन ही बड़ा रूप धारण कर लिया। इससे डरकर दलितों के करीब 50 परिवार गांव से पलायन कर गए हैं। गुर्जरों ने 28 अप्रैल की देर रात पुलिस और पीएसी की मौजूदगी में दलितों की बस्ती पर जेसीबी, डंपर और बुलडोजर आदि के साथ हमला बोला। बुलडोजर से एक घर ढहा दिया गया। साथ ही हिंसा के एक आरोपी सुभाष चंद्र के सिद्धार्थ पब्लिक स्कूल को भी गिरा दिया। वसुंधरा के एक अन्य स्कूल पर भी धावा बोला। इसके अलावा बिजली के कई खंभे और उन पर लगे तार तोड़ दिए गए। पूरे गांव में दहशत बनी हुई है। हमलावरों के पास बंदूकें एवं तलवारें भी थी। लगभग 40-50 लोगों ने कई राउण्ड फायरिंग भी की।

रात डरे-सहमे परिवार कनावनी गांव में जमीन के लिए सोमवार सुबह हुई हिंसा की लपटें रात में फिर धधक गई। साढ़े दस बजे तक दबंगों ने जवाबी कार्रवाही की। इस दौरान पुलिस का रवैया बेहद लापरवाह रहा। दहशत के चलते मंगलवार को दलित बस्ती के अधिकतर मकान खाली हो गए। घर छोड़कर सुरक्षित ठिकाना तलाशने का सिलसिला मंगलवार को पूरे दिन चला। कई परिवार सोमवार रात जान बचाने के लिए घर खुला छोड़कर भाग गए थे। उनके घरों के खुले दरवाजे और अंदर-बाहर फैले सामान दहशत बयां कर रहे थे। घर छोड़ गए दलितों के मकान में रहनेवाले किराएदारों का इस विवाद से काई लेना-देना नहीं था। उन्हें भी धमकियां मिल रही कि जान की सलामती चाहते हैं तो कोई और ठिकाना ढूंढ लें। घटना के बाद वहां पर दो पीसीआर और एक प्लाटून पीएसी तैनात की गई। मंगलवार दोपहर गांव में सुरक्षा का आलम था कि पुलिस और पीएसी गांव के शुरुआत में पूर्व प्रधान देशराज कसाना के घर के आसपास ही दिखाई दे रही थी। जहां सोमवार रात दबंगों ने हमला किया वहां न तो रात में पुलिस तैनात थी और न ही मंगलवार दोपहर। गांव के बाकी हिस्से में भी कहीं पुलिस बल देखने को नहीं मिला। मीडिया से जानकारी मिलने पर एसएसी प्रीतिंदर सिंह ने सिद्धार्थ पब्लिक स्कूल के पास दो पीसीआर और एक प्लाटून पीएसी की तैनाती कराई। इसके साथ ही गांव के अन्य हिस्सों में भी पुलिस एवं पीएसी बल तैनात किया गया।

दलितों और गुर्जरों के बीच इस जमीनी विवाद ने एक बड़ा रुप ले लिया। पुलिस और प्रशासन हालात शांत बता रहे हैं परंतु लगता है कि आग अंदर ही अंदर सुलग रही है। मजबूर दलित परिवार अभी भी

पलायन को मजबूर हैं और यह विवाद अब राजनैतिक रंग लेने लगा है। कहा जाता है कि यहां पर पूर्व प्रधान दलित और मौजूदा प्रधान गुर्जर के बीच लड़ाई है। ये दोनों ही परिवार मजबूत हालत में हैं परंतु दूसरे लोगों को इसका खामियाजा भुगतना पड़ रहा है। जहां तक पुलिस प्रशासन का मामला है तो वह कोई कार्रवाई करने के बजाय चुप बैठकर तमाशा देख रहा है। अभी तक सिर्फ एकतरफा कार्रवाई की गयी है। पुलिस प्रशासन की मंशा देख दलित परिवार डरे-सहमे हैं। अभी से इसे गंभीरता नहीं लिया गया तो आने वाले समय में कोई बड़ी घटना घट सकती है। पुलिस तो मामला ठंडा दिखाने की कोशिश कर रही है परंतु इलाके के कुछ लोगों से बात करने पर पता चलता है कि अभी भी जबरदस्त तनाव बना हुआ है और अगर पुलिस बल हट गया तो किसी बड़ी अनहोनी की आशंका से इंकार भी नहीं किया जा सकता।

ज्ञात रहे कि इस गांव में हर समुदाय के लोग रहते हैं। परंतु गुर्जरों व दलितों की सर्वाधिक संख्या है इस कारण गांव की राजनीति इन्हीं बिरादरी के इर्द-गिर्द घूमती रहती है। अब पुलिस प्रशासन शांति का लाख भरोसा दे परंतु बदले की चिंगारी अभी शांत नहीं हुई है। दोनों समुदाय के लोगों को शांति और धैर्य से परिस्थिति की समीक्षा कर मामले को निपटाना होगा।

(साभार :- शिल्पकार टाइम्स)

बहुजन जागो

तुम्हें जगाने बाबा आया,
फूंक दी शक्ति सारी।
दुनियां उठ गयी उठ न सके तुम
हैं यह भूल तुम्हारी।
कष्ट अनेकों तन पर झेले
फिर भी न हिम्मत हारी।।
तुम्हें जगाने बाबा आया।।

तुम सो रहे गहरी नींद में
नहीं उठने की तैयारी।
मां-बहनों की इज्जत लूट रही
देखो निगाह पसारी।
लुच्चे-गुण्डे लूट मचा रहे
लुट रहे दलित लाचारी।।
तुम्हें जगाने बाबा आया।।

लोग यहां पशुवत से रहते
रहते नित्य दुखारी।
ऊंच-नीच का पेड़ खड़ा है
सींचे अत्याचारी।
कब उठेगा तू दलित बता दे
तू है अधिक दुखारी।।
तुम्हें जगाने बाबा आया।।

ले पकड़ बुद्ध का धम्म
मिटा दे तू अंधियारी।
तू छोड़ दे पाखंड
त्याग सभी बीमारी।
''सुमन'' नमों बुद्धाय नमों
भीमाय
रटले तू भीम पुजारी।।
तुम्हें जगाने बाबा आया।।

-टी. एस. सुमन

पाठकों से अपील

'वॉयस ऑफ बुद्धा' के सभी पाठकों से निवेदन है कि जिन्होंने अभी तक वार्षिक शुल्क/शुल्क जमा नहीं किया है, वे शीघ्र ही बैंक ड्रॉफ्ट द्वारा 'जस्टिस पब्लिकेशंस' के नाम से टी-22, अतुल ग्रोव रोड, कनॉट प्लेस, नई दिल्ली-110001 को भेजें। शुल्क 'जस्टिस पब्लिकेशंस' के खाता संख्या 0636000102165381 जो पंजाब नेशनल बैंक की जनपथ ब्रांच में है, सीधे जमा किया जा सकता है। जमा कराने के तुरंत बाद इसकी सूचना ईमेल, दूरभाष या पत्र द्वारा दें। कृपया 'वॉयस ऑफ बुद्धा' के नाम ड्राफ्ट या पैसा न भेजें और मनीआर्डर द्वारा भी शुल्क न भेजें। जिन लोगों के पास 'वॉयस ऑफ बुद्धा' नहीं पहुंच रहा है, वे सदस्यता संख्या सहित लिखें और संबंधित डाकघर से भी सम्पर्क करें। आर्थिक स्थिति दयनीय है, अतः इस आंदोलन को सहयोग देने के लिए खुलकर दान या चंदा दें।

सहयोग राशिः

पांच वर्ष : 600 रुपए
एक वर्ष : 150 रुपए

परिसंघ समाज की संजीवनी

डॉ. उदित राज

मैं भारतीय जनता पार्टी में शामिल हुआ इसका मतलब यह नहीं कि अनुसूचित जाति/जनजाति संगठनों को अखिल भारतीय परिसंघ के आंदोलन को नजरअंदाज कर दिया। समय की मांग है कि इसे और मजबूत किया जाए। मूल कारण यह है कि कर्मचारी, अधिकारी एवं बुद्धिजीवी ही वर्तमान सच्चाई से समाज को अवगत करा सकते हैं। परेशानी की बात है कि जिस रूप में ये सोचते हैं और कार्यप्रणाली है उससे समाज को योगदान ज्यादा नहीं दिया जा सकता। परिसंघ के लोग सोशल मीडिया या मीडिया से परिचित नहीं हैं। बदली हुई परिस्थिति से इन्हें अवगत होना है। यह कोई मुश्किल नहीं है क्योंकि इनमें उतनी बौद्धिक क्षमता है जिससे आसानी से सूचना की दुनिया में हो रही क्रांति अर्थात् सोशल मीडिया को न केवल जल्दी समझ सकेंगे बल्कि इस्तेमाल कर सकेंगे। भारतीय जनता पार्टी ने सोशल मीडिया को बहुत अच्छी तरह से जाना-परखा और इस्तेमाल किया। आम आदमी पार्टी को भी यहीं से ताकत मिली। शीघ्र ही परिसंघ की ओर से प्रशिक्षण का आयोजन किया जाएगा।

कुछ लोग मेरी आलोचना कर रहे हैं कि मैंने भाजपा का दामन थाम लिया है। वहां पर भी रहकर के जब अवसर मिला तो समाज की बात उठायी। कहां गए कथित अंबेडकरवादी और मूल निवासी जो पूरे चुनाव में गायब रहे। क्या चुनाव में निजी क्षेत्र में आरक्षण या भागीदारी की बात उठ पायी? ये संगठन क्या केवल गाली देते रहेंगे?ब्राह्मणवाद पर जुबानी हमला से क्या समाज को मान-सम्मान मिल सकेगा?कांशीराम जी के द्वारा शुरू किए गए आंदोलन में मान-सम्मान की बात की प्राथमिकता थी। रचनात्मक कृत्य कम और मनुवाद की आलोचना ज्यादा करके एक सीमा तक दबे-कुचलों को संगठित करने में कामयाबी मिली। शुरुआती दौर के लिए तो यह ठीक था लेकिन यही आंदोलन का आधार बन गया। संगठित हो जाने के बाद का आधार जो आंदोलन का होना चाहिए था, वह हो न सका। इसी दौर में नयी आर्थिक नीति देश में लागू होती है और उससे न केवल आरक्षण कमजोर होना शुरू हुआ बल्कि निजीकरण एवं उदारीकरण के कारण जो विकास और भागीदारी के नए अवसर पैदा हुए उस पर पूरा मौन रहे। जो भी दूसरे आंदोलन पैदा हुए उनको मनुवादियों का एजेंट कहकर के बदनाम करना और स्थिति यह बनी कि न स्वयं निजीकरण को रोक पाए और दूसरों को भी उभरने नहीं दिया। अनुसूचित जाति/जनजाति संगठनों का अखिल भारतीय परिसंघ के साथियों को लगातार दुष्प्रचार का शिकार होना पड़ा। हमहीं थे जो वस्तुगत परिस्थिति को समझ सकें और संघर्ष करते रहे। इस चुनाव के दौरान वे भी मुद्दे नहीं उठा सके जो संसद में लंबित हैं जैसे आरक्षण कानून बनाना व पदोन्नति में आरक्षण।

इस चुनाव से सीख लेना चाहिए कि परिस्थिति बदल चुकी है और उसके अनुरूप तमाम संगठनों को ढलना है। मीडिया ने इस चुनाव में काफी हद तक नेता बनाया और बिगाड़ा है। आरक्षण जैसे मुद्दों पर बात करने पर मीडिया ने बहिष्कार किया और आगे करती रहेगी। हम 15 सालों से न केवल वर्तमान बल्कि भविष्य में क्या करना चाहिए, आगाह करते रहे लेकिन समाज केवल आलोचनात्मक दिशा में चलता रहा। होना यह चाहिए कि शिक्षा का निजीकरण तेजी से हुआ है उसमें भागीदारी की मांग किया जाय। निजी क्षेत्र में उद्योग और व्यापार तेजी से पनपा है, दलितों व पिछड़ों को उद्यमी बनाने के लिए प्रयास करते-करते तमाम क्षेत्र में भागीदारी के लिए संसद से लेकर गांव तक संघर्ष होना चाहिए था। चूंकि यह कार्य कोई दूसरा नहीं कर सकता इसलिए परिसंघ के लोगों की ही जिम्मेदारी है कि इस अधूरे कार्य को अंजाम तक पहुंचाये।

बुद्ध पूर्णिमा

मनोहर पुरी

बौद्ध साहित्य के अनुसार इस प्रकार बैसाख पूर्णिमा भगवान बुद्ध के प्रत्येक सहयात्री, घटनाक्रम और जीवन परिवर्तन का पावन दिवस रहा है। इसे नियति की एक महती योजना ही समझना चाहिए कि बौद्ध धर्म के प्रवर्तक महात्मा बुद्ध का जन्म 563 ई. पू. बैसाख पूर्णिमा को हुआ। यह दिवस उनके और उनके अनुयायियों के साथ तब से आज तक जुड़ा हुआ है। भगवान बुद्ध ने बैसाख पूर्णिमा 483 ई. पू. में 80 वर्ष की आयु में, देवरिया जिले के कुशीनगर में निर्वाण प्राप्त किया। उनका परम प्रिय शिष्य आनन्द, पत्नी यशोधरा, सारथी चन्ना और यहाँ तक की अश्व कटंक भी अपनी जीवन यात्रा का प्रारम्भ करने के लिए इसी दिन जन्में। जिस पीपल वृक्ष के नीचे सिद्धार्थ ने कठिन तपस्या कर बोधित्व प्राप्त किया उसका रोपण भी बैसाख पूर्णिमा को ही हुआ था। इसी दिन समाज में पतिता समझी जाने वाली सुजाता ने तपस्या के जर्जर सिद्धार्थ को पूजा के लिए खीर अर्पित की थी। बौद्ध साहित्य के अनुसार इस प्रकार बैसाख पूर्णिमा भगवान बुद्ध के प्रत्येक सहयात्री, घटनाक्रम और जीवन परिवर्तन का पावन दिवस रहा है। आज विश्व के कोने-कोने में बैसाख पूर्णिमा के शुभ अवसर को बुद्ध पूर्णिमा के नाम से मनाया जाता है।

भगवान गौतम बुद्ध की जन्मस्थली होने के कारण भारत की धरती पर ही जन्मा है बौद्ध धर्म, प्रारम्भ से ही बौद्ध धर्म ने भारतीय जनमानस पर अपनी अमिट छाप छोड़ी है। आज भी इस धर्म द्वारा प्रतिपादित सिद्धांतों की अपनी प्रासंगिकता है। यदि भगवान बुद्ध द्वारा दिखाए गए मार्ग पर हम चलने लगें तो विश्व को शान्ति के मार्ग पर आगे ले जाने के लिए हम एक महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वाह कर सकते हैं। जब भगवान बुद्ध इस धरती पर अवतरित हुए तब चारों ओर हिंसा और स्वार्थ का बोलबाला था। हिंदू समाज को अनेकानेक कर्मकांडों ने अपने बंधनों में जकड़ा हुआ था। समाज के कुछ वर्ग अपने

स्वार्थों की रक्षा के लिए अन्य वर्गों का शोषण करने में जुटे थे। बलि प्रथा का सर्वत्र प्रचलन था फलतः प्रतिदिन हजारों पशुओं की बलि चढ़ाई जाती थी। पशु-पक्षियों के वध के कारण चारों ओर हिंसा का वातावरण बना हुआ था। लोगों की धर्म से आस्था उठने लगी थी। आज भी वैज्ञानिक प्रगति के कारण लोगों की धर्म में अनास्था बढ़ती जा रही है। भौतिकता की अधिकता के कारण उनके मन अविश्वासी और शंकालु बनते जा रहे हैं। आज हिंसा पहले की अपेक्षा कहीं अधिक भयावह आकार धारण किए पूरी मानवता को त्रस्त किए हुए है। अणु बमों के रूप में हिंसा की एक छोटी-सी चिंगारी सारी मानवता को तहस नहस करने में सक्षम समझी जा रही है। ऐसी स्थिति में अहिंसा ही एक ऐसा मूल मंत्र है जो मानव समाज की इस विनाश से रक्षा कर सकता है। यही वह बिन्दु है जहाँ गौतम बुद्ध आज की परिस्थितियों में भी उतने ही प्रासंगिक हो उठते हैं जितने आज से हजारों वर्ष पूर्व थे।

आज का मनुष्य जितना अधिक अधीर एवं असंयमी है उतना शायद पहले कभी नहीं रहा। वह रातों रात वह सब कुछ पा लेना चाहता है जो उसके पूर्वज सदियों में भी प्राप्त नहीं कर पाए थे। सब कुछ अपने पास ही समेट लेने की चाह ने जहाँ उसे स्वार्थी बनाया है वहीं उसे हिंसा का शिकार भी बना डाला है। फलस्वरूप वह मानसिक तनावों का शिकार हो कर लोभी, कामी, क्रोधी और हिंसक को उठा है। मानवीय मूल्यों का निरन्तर ह्रास होता जा रहा है। ऐसी हालत में गौतम बुद्ध के सिद्धांतों का शीतल मरहम ही उसके घावों को ठंडक पहुँचा सकता है।

ऐसे समय में जब भारतीय समाज अनेकानेक कुरीतियों और कर्मकांडों में फँसा अस्त-व्यस्त हो रहा था, गौतम बुद्ध ने जन्म लेकर समाज को सुव्यवस्थित करने के लिए अहिंसापरक सिद्धान्तों की स्थापना की। सिद्धार्थ के रूप में भगवान गौतम बुद्ध का जन्म राजा शुद्धोधन के यहाँ लुम्बिनी नामक स्थान पर हुआ। नेपाल की तराई में स्थित यह स्थान उनकी राजधानी कपिलवस्तु के समीप ही है। राजा शुद्धाधन शाक्य क्षत्रिय वंश के एक अच्छे शासक थे। सिद्धार्थ की माता महामाया कौशल राजवंश की राजकुमारी थी। बचपन में ही सिद्धार्थ की माता का स्वर्गवास होने के कारण उनका लालन-पालन विमाता महाप्रजापति गौतमी ने किया। राजवंशीय परम्पराओं के अनुरूप ही उनका लालन-पालन अति वैभवपूर्ण वातावरण में हुआ।

बचपन से ही सिद्धार्थ परपीड़ा से विचलित हो उठते थे। किसी को भी कष्ट में देख कर उसकी सहायता करने की उनके मन में एक सहज ललक थी। ज्योतिषियों ने राजा शुद्धोधन को सचेत कर दिया था कि

शेष पृष्ठ 7 पर...

Appeal to the Readers

You will be happy to know that the **Voice of Buddha** will now be published both in Hindi and English so that readers who cannot read in Hindi can make use of the English edition. I appeal to the readers to send their contribution through Bank draft in favour of **'Justice Publications'** at T-22**,** Atul Grove Road, Connaught Place, New Delhi-110001. The contribution amount can also be transferred in 'Justice Publications' Punjab National Bank account no. 0636000102165381 branch Janpath, New Delhi, under intimation to us by email or telephone or by letter. Sometimes, it might happen that you don't receive the Voice of Buddha. In that case kindly write to us and also check up with the post office. As we are facing financial crisis to run it, you all are requested to send the contribution regularly.

Contribution:
Five years : Rs. 600/-
One year : Rs. 150/-

दिल्ली बनाम भगाणा गैंग रेप कांड

एच. एल. दुसाध

2012 की सर्दियों के बाद एक बार फिर राष्ट्रीय राजधानी बलात्कार के विरुद्ध मुखर है। लेकिन तब और अब में काफी फर्क है। तब दिल्ली में एक पैरा मेडिकल छात्रा के साथ 16 दिसंबर की रात चलती बस में सामूहिक बलात्कार की एक रोंगटे खड़ी कर देनेवाली घटना हुई थी। दुष्कर्मियों ने बुरी तरह जख्मी पीड़िता और उसके मित्र को निर्वस्त्र कर चलती बस से बाहर फेंक दिया था। तब 'निर्भया' के बलात्कार और उसकी हत्या के बाद दिल्ली के मध्यम वर्ग के युवाओं में तीव्र प्रतिक्रिया हुई थी। उन्होंने बलात्कारियों को फांसी दो, फांसी दो की मांग करते हुए एकाधिक बार दिल्ली के विजय चौक को तहरीर चौक में तब्दील किया था। तब मीडिया उनकी आवाज में आवाज मिलाते हुए बलात्कार जैसे जघन्य अपराध के खिलाफ जनाक्रोश पैदा करने में विराट भूमिका अदा की थी। उसकी सक्रियता के फलस्वरूप रायसीना हिल्स से राजघाट, कोलकाता से कोयम्बटूर और श्रीनगर से चेन्नई तक लोग विरोध प्रदर्शन के लिए उमड़ पड़े थे। बहरहाल 2012 के सवा साल बाद दिल्ली सामूहिक बलात्कार की जिस घटना को लेकर नए सिरे से उत्पत्त हुई है, वह दिल्ली नहीं, हरियाणा के हिसार जिले के भगाणा गाँव की घटना है।

जिस वर्ष दिल्ली में निर्भया काण्ड हुआ था, उसी वर्ष भगाणा के जाटों ने गाँव के सभी दलित परिवारों का बहिष्कार किया था। उनके बहिष्कार के विरोध में चमार, खाती आदि जैसी अपेक्षाकृत मजबूत दलित जातियों के 80 परिवार हिसार के मिनी सचिवालय में खुले आसमान के नीचे शरण ले लिए, किन्तु उसी गांव के दलितों की एक दुर्बल जाति, धानुक लोग गाँव में ही बने रहने का फैसला किये। इन्हीं धानुक परिवारों की चार लड़कियों को भगाणा के जाट जाति के दबंगों ने 23 मार्च को अगवा कर दो दिनों तक सामूहिक बलात्कार किया। आठवीं और नौवीं क्लास में पढ़नेवाली इन लड़कियों का कसूर बस इतना था कि वे पढ़ना चाहती थीं जिसके लिए उनके अभिभावकों ने इजाजत दे रखी थी। यह जाटों के लिए बर्दाश्त के बाहर की बात थी। लिहाजा उन्होंने इन लड़कियों को सजा देकर दलित समुदाय को उसकी औकात बता दिया। घटना के प्रकाश में आने के बाद जहाँ सरकारी डाक्टरों ने मेडिकल जांच में अनावश्यक विलम्ब कर घोर असंवेदनशीलता का परिचय दिया वहीं पुलिस ने किसी तरह एफआईआर तो दर्ज कर लिया, पर किसी दोषी का नाम दर्ज नहीं किया। हार-पाछ कर पीड़ित परिवार गांव छोड़कर राष्ट्रीय राजधानी पहुंचे और जंतर-मंतर पर बैठ कर इंसाफ की गुहार लगाने लगे। पीड़ित बच्चियों को इंसाफ दिलाने की उनकी मुहिम में धीरे-धीरे दिल्ली के भारी संख्यक छात्र, शिक्षक, लेखक, कलाकार, सोशल एक्टिविस्ट, युवक-युवतियां जुड़ गए। किन्तु जिस तरह 2012 की सर्दियों में मध्यम वर्ग के युवाओं की सक्रियता के फलस्वरूप निर्भया को इंसाफ दिलाने के लिए शहर-शहर, गाँव-गाँव, बस्ती-बस्ती में लोग मुखर हुए, वैसा इस बार नहीं हो रहा है तो उसका प्रधान कारण मीडिया है। निर्भया कांड में असाधारण भूमिका का निर्वहन करने वाली मीडिया तथा बुद्धिजीवी वर्ग भगाणा सामूहिक बलात्कार काण्ड पर लगभग चुप्पी साधे हुए हैं। जबकि इस घटना को हाईलाईट करना उनका अत्याज्य कर्तव्य बनता था। क्योंकि यह निर्भया कांड से ज्यादा गुरुतर घटना है।

बलात्कार एक वैश्विक समस्या है जिसके पीछे मुख्यतः 'यौन-कुंठा' की क्रियाशीलता रहती है। दुर्भाग्य से विशेष सामाजिक-आर्थिक और सांस्कृतिक कारणों से हिंदी पट्टी में यौन-कुंठा एक महामारी का रूप अख्तियार किये हुए है। इस महामारी के कारण ही यहां की मेट्रो सिटी दिल्ली में बंगलुरु, मुंबई, कोलकाता इत्यादि के मुकाबले हर वर्ष दुष्कर्म की कई गुना ज्यादे घटनाएँ दर्ज होती हैं। दुर्भाग्य से 2012 में इसी दिल्ली में 16 दिसंबर की रात सिनेमा देखकर अपने ब्वाय फ्रेंड के साथ घर लौट रही निर्भया का सामना चलती खाली बस में एक खास किस्म के लोगों से हो गया था। सामान्यतया झुग्गी-झोपड़ियों में पले-बढे साधारण आर्थिक पृष्ठभूमि के ऐसे लोगों को अमीरों की भांति यौन-कामना की पूर्ति के लिए अय्याशगाहें नसीब नहीं होतीं। ऐसे लोग मोबाईल में ब्लू फिल्में और अश्लील नाच-गाने देख कल्पना में नारी-सानिंध्य का आनंद लेने का आदी होते हैं। बसों के ऐसे स्टाफ में रात होते ही दारू और औरत की चाहत हिलोरे मारने लगती है। ऐसे लोगों की चपेट में कोई नारी आ जाये तो बेशर्मी से आँखें फाड़-फाड़ उसके शरीर का एक्सरे करने से बाज नहीं आते और थोड़ा सा मौका मिल जाये तो उसकी देह-स्पर्श का स्पर्श सुख भी लूट लेते हैं। थोड़ा और ज्यादा अवसर हो तो ऐसे लोग उसकी देह लूटने तक की जोखिम उठा लेते हैं। ऐसे ही लोगों ने उस दिन निर्भया के साथ दरिंदगी की हदें पार कर लिया था।

किन्तु दिल्ली के विपरीत भगाणा सामूहिक बलात्कार काण्ड को अंजाम देने के पीछे भिन्न मनोविज्ञान क्रियाशील रहता है। ऐसे कांड के एक्टर भी यौन-कुंठा से मुक्त नहीं होते। पर भगाणा जैसे कांड को योजनाबद्ध तरीके से अंजाम देने के पीछे उनका मकसद एक ऐसे मानव समुदाय को उसकी औकात बताना रहता है जिसकी सत्ता हिन्दू धर्म शास्त्रों द्वारा मनुष्य नहीं, मनुष्येतर प्राणी के रूप में ही स्वीकृत है। ऐसे दैविक सर्वस्वहारा अस्पृश्य जब आम लोगों की तरह अपने मानवीय अधिकारों का इस्तेमाल करते हैं, दैविक अधिकार संपन्न हिन्दू इन मानवेतरों का मनोबल ध्वस्त करने के लिए भगाणा जैसे कांड अंजाम दे देते हैं। दिल्ली गैंग रेप जैसे कांड कमोवेश दुनिया में हर जगह होते रहते हैं। पर थोड़े-थाड़े अंतराल पर भगाणा जैसे कांड विश्व के एकमात्र जाति समाज, भारत में होते हैं, अन्य किसी सभी समाज में नहीं। डा. आंबेडकर ने ऐसी घटनाओं को एक मनुष्य पर दूसरे मनुष्य के अत्याचार के रूप नहीं, बल्कि एक निर्बल समाज पर दूसरे समर्थ समाज के आक्रमण और जुल्म, शोषण तथा उत्पीड़न के रूप में चिन्हित किया है। दिल्ली गैंग रेप के कारण दुनिया में भारत की छवि एक दुष्कर्मी देश के रूप में स्थापित नहीं होती, किन्तु भगाणा जैसे कांडों के कारण इसे मध्य युग में वास कर रहे एक बर्बर व असभ्य मुल्क के रूप में देखा जाता है।

कुल मिलाकर सुनियोजित तरीके से अंजाम दिया गया भगाणा गैंग रेप दिल्ली गैंग रेप के मुकाबले बहुत गंभीर मामला है। दिल्ली दुष्कर्म कांड से पीड़िता और उसका परिवार प्रभावित हुआ था, जबकि भगाणा का परोक्ष असर दलितों के रूप में विद्यमान यूरोप के कई देशों की मिलित विशाल आबादी पर पड़ता है। बहरहाल निर्भया कांड के खिलाफ जो राष्ट्रमय इंसाफ की मांग बुलंद हुई थी, उसका असर हुआ। महिलाओं के खिलाफ यौन अपराध की रोकथाम के लिए कानून में कई संशोधन और उनकी सुरक्षा के लिए बजट में निर्भया के नाम पर 1000 करोड़ के विशेष फंड का प्रवधान हुआ। यही नहीं दोषियों को फांसी सी से लेकर उम्र-कैद तक को कठोरतम सजा मुकर्रर हुई एवं निर्भया के परिवारजनों को फ्लैट और लाखों का आर्थिक मुआवजा भी मिला।

भगाणा काण्ड में इंसाफ की मांग है कि छुट्टा घूम रहे बलात्कारियों की अविलम्ब गिरफ्तारी हो तथा फास्ट ट्रैक कोर्ट गठित कर मामले की छः महीने के अन्दर सुनवाई पूरी हो। बलात्कार पीड़ित बच्चियों तथा पलायित परिवारों के लिए एक-एक करोड़ रुपये के साथ गुडगांव या फरीदाबाद में 400 गज का आवासीय भूखण्ड सुलभ कराया जाय। इसके साथ बलात्कार पीड़ित बच्चियों को बेहतर शिक्षा और शिक्षा के बाद सरकारी नौकरी की व्यवस्था की जाय। दिल्ली की निर्भया के मुकाबले भगाणा मामले की गंभीरता को देखते हुए दलित समाज को उम्मीद रहेगी कि सरकार और न्यायालिका भगाणा पीड़ितों को इंसाफ दिलाने में कोई कोताही नहीं करेगी।

(लेखक बहुजन डाइवर्सिटी मिशन के राष्ट्रीय अध्यक्ष हैं)

CONFEDERATION IS THE LIFE-LINE

Dr. Udit Raj

Just because I have joined Bhartiya Janata Party does not mean that I have sidetracked All India Confederation of SC/ST Organizations. The present situation demands that this organization should be further strengthened. The fact is that it is only the employees, officers and intellectuals who can create awareness in the community about the ground reality. Strangely their mindset and style of functioning cannot make any significant contribution to the community. The Confederation people are not aware of the working of Media or social media. They have to be acquainted with the changed situation. It is not difficult to do so as most of the members of the Confederation are mentally fully equipped to keep pace with the revolutionary developments in information technology and social media in the world. Bhartiya Janata Party could very well understand the importance of social media and made full use of this tool. Aam Admi Party also owes its rise to the social media. Shortly, suitable training programmes will be organized by the Confederation on social media.

Some people are criticizing me for my joining Bhartiya Janata Party. Even after joining BJP, I have raised issues concerning the community whenever I have got an opportunity to do so. Where are the so-called Ambedkarites and Adivasis who were not to be seen anywhere during the recently held Lok Sabha elections?. Could they raise the issues of reservation in private sector and share in governance? Or will they spend their time only in criticizing others? Can we get honour and respect for our community only by launching verbal attacks on Brahminism? In the campaign started by Kanshi Ram Ji, maximum emphasis was given on honour and dignity for Dalits. By doing less constructive work and harping more on criticism of Manuvad, only limited success has been achieved so far as welfare of Dalits is concerned. In the initial stages, this approach was all right but this ultimately became the very basis of the movement which is not good for the healthy growth of a movement. During this period, new economic policy was introduced in the country due to which the cause of reservation not only suffered but also the new opportunities created by privatization and liberalization could not be availed of. Whatever other movements were started, were criticized by branding them as pro-Manuvadi with the result that neither the onslaught of privatization could be stopped nor others were allowed to come up. Members of the All India Confederation of SC/ST Organizations had to face false propaganda unleashed by some vested interests. We, however, stuck to our guns and continued our struggle based on the ground reality. Even during the recent Lok Sabha elections, these so-called Ambedkarites and Adivasis could not raise the issues like the Reservation Bill and Reservation in Promotions Bill which are pending in the Lok Sabha.

We should learn a lesson from the recent Lok Sabha election that the situation has changed and all the organizations have to mould themselves accordingly. In these elections, Media has played a significant role in making or unmaking a leader. Media has simply avoided issues like reservation and they will continue to do so in future also. For the last 15 years, we have not only been making our community aware of the present-day problems but also about the future course of action but we faced only criticism from the community. We should have asked for a share in the field of education where privatization has taken place speedily,. There has been a spurt in Trade and Industry and various other fields. Concerted efforts should have been made to bring more and more Dalits and Backwards in trade, industry and all other fields. Just because nobody else can take up these causes for Dalits and Backwards, the responsibility of this unfinished agenda has been put on the shoulders of the Confederation.

शेष पृष्ठ 5 का ...

बुद्ध पूर्णिमा

यदि उनका पुत्र चक्रवर्ती सम्राट नहीं बन पाया तो सन्यासी हो जाएगा। सिद्धार्थ का मन इसी दुनिया के भोग विलास में रम कर रह जाए इसके लिए हर प्रकार के साधन उपलब्ध कराए गए और 18 वर्ष की अवस्था में एक रूपमती कन्या यशोधरा से उनका विवाह कर दिया गया। जब उन्हें पुत्र रत्न की प्राप्ति हुई तो सिद्धार्थ ने उसका नाम राहुल अर्थात बन्धन रख दिया परन्तु यह बन्धन भी उनके लिए पगबाधा नहीं बन सका। सिद्धार्थ अपने जीवन में मोहमाया को बन्धन मानते थे फलतः शीघ्र ही उन्होंने परिवार के सब बन्धन तोड़ डाले और 21 वर्ष की युवावस्था में ज्ञान की खोज में घर से निकल पड़े।

गृह त्याग के पश्चात सिद्धार्थ ने निरंजना नदी के तट पर पीपल के एक वृक्ष के नीचे घोर तपस्या करके ज्ञान प्राप्त किया, इसी ज्ञान की ज्योति कालान्तर में भारत ही नहीं विश्व के कोने–कोने में फैली। आज भी मानवता इसके आलोक में आलोकित हो रही है। ज्ञान की इस दिव्य ज्योति के कारण राजकुमार सिद्धार्थ गौतम बुद्ध कहलाए। गौतम बुद्ध ने अपनी शिक्षाओं के संबंध में अपना पहला उपदेश सारनाथ में दिया। सारनाथ नामक ग्राम के एक उपवन में बहुजन हिताय, बहुजन सुखाय का महामंत्र गूँज उठा, दुरुख, अज्ञान और परस्पर वैमनस्य से त्रस्त लोग इस अवतरित महापुरुष के समक्ष नतमस्तक होने लगे। गौतम ने जन–जन को अन्धविश्वासों, आतंक, हिंसा और स्वार्थ की संकुचित प्रवृतियों को उतार फेंकने का उपदेश दिया। उन्होंने सम्पूर्ण जगत के कल्याण के लिए सत्य, अहिंसा और प्रेम का सन्देश दिया। जन–जन को प्राणीमात्र के लिए दया, ममता, परस्पर मेलजोल और अपरिग्रह का पाठ पढ़ाया।

गौतम बुद्ध ने लगभग 40 वर्ष तक घूम–घूम कर अपने सिद्धांतों का प्रचार–प्रसार किया। वह उन गिने–चुने महात्माओं में से थे जिनके जीवन में ही उनके सिद्धांतों का प्रसार तेजी से हुआ और उन्होंने अपने द्वारा लगाए गए पौधे को वृक्ष बन कर पल्लवित होते हुए स्वयं देखा। गौतम बुद्ध ने बहुत ही सहज वाणी और सरल भाषा में अपने विचार लोगों के सामने रखे। अपने धर्म प्रचार में उन्होंने समाज के सभी वर्गों, अमीर गरीब, ऊँच–नीच तथा स्त्री–पुरुष को समानता के आधार पर सम्मिलित किया। किसी के मार्ग दर्शन में भी उन्होंने किसी प्रकार का भेदभाव नहीं किया। उन्होंने संघ की स्थापना की जहाँ सभी लोग मिलजुल कर समाज के उत्थान के लिए कार्य करते थे और उसमें अपना अपना योगदान देते थे। बुद्ध ने चार आर्य सत्यों की घोषणा करते हुए कहा कि उनके निवारण के लिए हर व्यक्ति प्रयास करने में सक्षम है। बुद्ध मानते थे कि संसार दुःखमय है, दुःखों का कोई न कोई कारण है, दुःख का निरोध है और दुःख निरोध का उपाय भी है। उन्होंने अविद्या को दुःख का मूल कारण माना। मन, वचन और कर्म से साधना के मार्ग पर चलने के लिए उन्होंने सम्यक दृष्टि, सम्यक वाणी, सम्यक कर्मान्त, सम्यक संकल्प, सम्यक आजीव, सम्यक व्यायाम, सम्यक स्मृति और सम्यक समाधि को अनिवार्य बताया। महात्मा बुद्ध का मानना था कि साधना द्वारा सर्वोच्च सिद्ध अवस्था को प्राप्त किया जा सकता है। यही अवस्था बुद्ध कहलाती है और इसे कोई भी प्राप्त कर सकता है।

यद्यपि बौद्ध धर्म का जन्म इसी पावन भूमि पर हुआ फिर भी अन्य भारतीय धर्मों की भांति बौद्ध धर्म में ईश्वर और आत्मा के अस्तित्व को स्वीकार नहीं किया गया। गौतम बुद्ध ने अपने आप को आत्मा और परमात्मा के निरर्थक विवादों में फँसाने की अपेक्षा समाज कल्याण की ओर अधिक ध्यान दिया। उनके उपदेश अधिकतर सामाजिक एवं संसारिक समस्याओं तक ही सीमित रहे। यही कारण है कि उनकी बात लोगों की समझ में सहज रुप से ही आने लगी। महात्मा बुद्ध ने मध्यममार्ग अपनाते हुए अहिंसा युक्त दस शीलों का प्रचार किया तो लोगों ने उनकी बातों से स्वयं को सहज ही जुड़ा हुआ पाया। बुद्ध का मानना था कि मनुष्य यदि अपनी तृष्णाओं पर विजय प्राप्त कर ले तो वह निर्वाण प्राप्त कर सकता है। इस प्रकार उन्होंने पुरोहितवाद पर करारा प्रहार किया और व्यक्ति के महत्त्व को प्रतिष्ठित किया।

मानवता को बुद्ध की सबसे बड़ी देन है भेदभाव को समाप्त करना। यह एक विडम्बना ही है कि बुद्ध की इस धरती पर आज तक छुआछूत, भेदभाव किसी न किसी रूप में विद्यमान हैं। उस समय तो समाज छुआछूत के कारण अलग–अलग वर्गों में विभाजित था। बौद्ध धर्म ने सबको समान मान कर आपसी एकता की बात की तो बड़ी संख्या में लोग बौद्ध मत के अनुयायी बनने लगे। अभी कुछ ही दशक पूर्व डाक्टर भीमराव आम्बेडकर ने भारी संख्या में अपने अनुयायियों के साथ बौद्ध मत को अंगीकार किया ताकि हिन्दुओं समाज में उन्हें बराबरी का स्थान प्राप्त हो सके। बौद्ध मत के समानता के सिद्धांत को व्यवहारिक रूप देना आज भी बहुत आवश्यक है।

बौद्ध धर्म हर प्रकार के भेद भाव से सर्वथा मुक्त रहा। किसी भी प्रकार के भेद को निर्वाण के मार्ग में बाधा नहीं माना गया। गौतम बुद्ध ने अत्यन्त कुशलता से बौद्ध भिक्षुओं को संगठित किया और लोकतांत्रिक रूप में उनमें एकता की भावना का विकास किया। इसका अहिंसा का सिद्धांत इतना लुभावना था कि सम्राट अशोक ने दो वर्ष बाद इससे प्रभावित होकर बौद्ध मत को स्वीकार किया और युद्धों पर रोक लगा दी। इस प्रकार बौद्ध धर्म को राजाश्रय प्राप्त हो गया। सिद्धार्थ का क्षत्रिय कुल इस धर्म का संरक्षक बना और बौद्ध मत देश की सीमाएँ लांघ कर विश्व के कोने–कोने तक अपनी ज्योति फैलाने लगा। आज भी इस धर्म की मानवतावादी, बुद्धिवादी और जनवादी परिकल्पनाओं को नकारा नहीं जा सकता और इनके माध्यम से भेदभावों से भरी व्यवस्था पर जोरदार प्रहार किया जा सकता है। यही धर्म आज भी दुःखी एवं अशान्त मानवता को शान्ति प्रदान कर सकता है। ऊँच–नीच के अभाव में लोगों के मन में धार्मिक एकता का विकास कर सकता है। विश्व शान्ति एवं परस्पर भाईचारे का वातावरण निर्मित करके कला, साहित्य और संस्कृति के विकास के मार्ग को प्रशस्त कर सकता है।

(साभार : अभिव्यक्ति)

VOICE OF BUDDHA

Publisher : Dr. UDIT RAJ (RAM RAJ), Chairman - Justice Publications, T-22, Atul Grove Road, Connaught Place, New Delhi-110001, Tel: 23354841-42

● Year : 17 ● Issue 12 ● Fortnightly ● Bi-lingual ● 1 to 15 May, 2014

Who Has Humiliated Dalits?

Dr. Udit Raj

If Baba Ram Dev had unintentionally made some undersirable remarks against Dalits, then he would also restore their honour and respect by making commendable remarks in favour of the community. On the 26th April, 2014, he had said that Rahul Gandhi visits Harijan Bastis for celebrating honeymoon. Baba Ram Dev's intention was only to criticize Rahul Gandhi's style of functioning but the word "honeymoon" was given a totally different twist. The word "honeymoon" in the normal sense is used when a couple visits a tourist spot like Nainital, Mussourie or Kashmir etc. to spend sometime together but in the present, it would be taken as a taboo by the residents of these tourist spots. Ram Dev Ji had not said that Rahul Gandhi visits Dalit Bastis to celebrate honeymoon with Dalit women but he had simply said that he visits Dalit Bastis. As an allegory, it could also be used when two or more persons spend some good time together or when there is a coalition between two political parties. Baba Ram Dev had expressed his regret over his unintentional remarks.Ms Mayawati and some other Dalit leaders suddenly became hyper active by making statements that Dalits had been greatly humiliated and an emotionally blackmailed Dalit community for political gains. They roped in Bhartiya Janata Party in this controversy. Baba Ram Dev is definitely a BJP supporter but he has his own distinct standing in the society and sometimes he has been found to be dis-satisfied with BJP policies. Baba Ram Dev is neither a member of Bhartiya Janata Party nor a spokesperson of the party. I have also not supported tbese remarks of Baba Ram Dev. Why does Ms Mayawati not take up the real issues concerning Dalits like their rights, education, health, employment etc as strongly as she has pounced upon BJP on "honeymoon" remarks made by Baba Ram Dev? Unfortunately, people of Dalit community are just swayed by emotions and do not bother to see things in proper perspective. Why don't they become aggressive and more vocal on the rights and their share in governance in different fields just as they have shown their anger on Baba Ram Dev's statement?

I feel very sad at the attitude of all the members of Dalit community who are swayed by emotions. On 23rd March, 2014, four Dalit girls were raped at Bhagana village of Hisar district in Haryana. These girls were raped for the simple reason that in the year 2012, dominant caste had boycotted Dalits who had then left the village. Since 21.5.2012, these Dalits are living in the open near Mini Secretariat of Hisar. Despite this boycott, about 95 Dalit families were living in the village and just to punish them for this, 4 Dalit girls were kidnapped and then gangraped for two days. Names of none of the accused persons has been mentioned in the FIR and they are still roaming scot free. These four victims with a large number of their relatives and friends are sitting on dharna at Jantar Mantar, New Delhi,since 16.4.2014, for seeking justice. Does Mayawati take this brutal rape of 4 Dalit girls as an act of honour for Dalit community? If not, why is she keeping silent on this issue and creating such a hue and cry on Baba Ram Dev's statement ? Some Dalits have also tried to put me in the dock as to why I am keeping silent on Baba Ramdev's statement. I would like to clarify that I am not at all silent on this issue and wherever I am given opportunity, I shall continue to struggle for the rights of Dalits and shall never compromise on Dalit issues. I have spent nearly 17 precious years of my life struggling for the rights,

honour and prestige of Dalits. Where are those Dalit revolutionaries who never hesitate to put me in the dock but never pick the courage to criticize Mayawati who maintains stoic silence on the issue of rapes of Dalit girls. This is a indeed a brazen attack on the honour and prestige of Dalits on which Mayawati is keeping silent. The Congress Party is taking the support of Mayawati by showing her CBI stick. As the Congress Party is in power in Haryana. it is for this reason that the recent heinous crime of gangrape of four Dalit girls in Haryana does not appear to be a an act of humiliation for Dalits in the eyes of Mayawati. The Reservation Bill was presented in the Rajya Sabha in 2004 and even after 10 years, it has not been passed. Reservation in Promotions Bill has also been pending in the Parliament. Did Mayawati ever criticize the Congress Party against this delay in passing the Bills? It is here that the real honour and prestige of Dalits are at stake.

I am not supporting Baba Ram Dev in the matter of his statement but the fact is that he has literally washed the feet of Dalit women and has also made donations for them. He has given employment to Dalits in his organizations. Is Bahujan Party is no more Bahujan in its approach when it has launched an attack on the people of his caste? A Brahmin can sit by the side of Mayawati on a public platform but Dalits are never given that honour. In a highly planned way, Mayawati has demolished the entire structure of Dalit leadership. Dalit leadership cannot emerge in BSP under Mayawati either at national, state, district or even block level. Can there be anything more humiliating and insulting than this for Dalits? The right for reservation in promotions which I had secured after a long struggle was taken away by Lucknow High Court during the tenure of Ms Mayawati's Chief Ministership as she had not followed up this case properly. In 2007, Mayawati had diluted the provisions of the SC/ST Atrocities Act by issuing a circular against which I filed a petition in Allahabad High Court and this cirucular was set aside by the Court. Can any BSP worker discuss these issues with BSP Supremo Mayawati?

With the rise of BSP, a new economic policy was announced which gave raise to all avenues of trade, employment and income. Did anybody protest against this new economic policy or ensure a suitable share for Dalits in governance. None of these objectives could be achieved. All Dalits consider BSP as their sole protector but Mayawati treats them with scorn. Why Mayawati is having so many expectations from the upper caste people when herself is not giving them respect? BSP's workers are selfish and cowards and they do not have the courage to discuss these issues with Mayawati, what to talk of taking any decision on such issues. She does not hold moral basis to question upper castes that why they are not treating dalits well in their home when she is not doing that at her level. Other dalit leaders can raise voice against such outslaughts but not Mayawati.

Publisher, Printer and Editor - Dr. UDIT RAJ (FORMERLY KNOWN AS RAM RAJ), on behalf of Justice Publications, T-22, Atul Grove Road, Connaught Place, New Delhi-110001, Tel: 23354841-42, Telefax:23354843, Printed at Sanjay Printing Works, WZ-4A, Basai Road, New Delhi.

Website : www.uditraj.com E-mail: dr.uditraj@gmail.com

Computer typesetting by N. K. Karn